रात का गीत (1 दिसम्बर**)**

यूहन्ना **19:26,27 जब** यीशु ने अपनी माता, और उस चेले को जिससे वह प्रेम रखता था**,** पास खड़े देखकर अपनी माता से कहा**; "**हे नारी**,** देख**,** यह तेरा पुत्र है। तब उस चेले से कहा**, "**यह तेरी माता है" **…**।

हमारे प्रभु, अपने बारे में सोचने से कितने दूर थे और न ही अपनी पीड़ा के बारे में सोच रहे थे परन्तु क्रूस पर भी दूसरों के ही बारे में सोच रहे थे। अपने सेवा कार्यों के दौरान वे भलाई ही कर रहे थे, इसलिए मृत्यु के आखरी क्षणों में भी उन्होंने दूसरों की भलाई के बारे में ही सोचा। इस वचन में, उन्होंने अपनी माँ को अपने प्यारे चेले को समर्पित कर दिया, उनकी देखभाल के लिए। बहुत ही खूबसूरत पाठ है ये! यह वचन किस तरह से हमारे प्रभु के हृदय की विशालता और उनकी सहानुभूति को दिखाता है, और हमें यह भी सिखाता है कि छोटी हो या बड़ी, हमारी परिक्षाओं और परेशानियों में हमें पूरी तरह से डूब नहीं जाना है, उलटे हमें दूसरों का बोझ उठानेवाला बनना है, और हमारी सहानुभूतियों, हमारे विचारों और हमारी योजनाओं में उन सभी को आशीषें देने के लिए तत्पर रहना है जो किसी भी अंश में अपने सांसारिक या आत्मिक मामलों के लिए हमारी देखभाल में है। `Z'08-152` R4173:1 (Hymn 312A) आमीन

रात का गीत (2 दिसम्बर**)**

इफिसियों 2:18 क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पंहुच होती है।

हम तब तक भटक जाने से बिलकुल भी सुरक्षित नहीं हैं जब तक कि हम बारबार अनुग्रह के सिंहासन के पास नहीं जाएँ। हम पवित्र आत्मा से तब तक नहीं भर सकते जब तक कि जहाँ से हमें पवित्र आत्मा मिलती है उस फव्वारे के बहुत नजदीक न रहें। हमारा मिटटी का घड़ा चुनेवाला (जिसमे छेद हो) है, इसलिए हमें प्रतिदिन हमारे इस मिटटी के घड़े (हमारा शरीर) को उस स्वर्गीय फव्वारे के पास ले जाना है ताकि इसे फिर से भर सकें। यदि हमें हमारे अंदर तेजी से उन्नति न दिखाई दे जैसी हम चाहते हैं, तो हमें हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। मजबूत वृक्ष जो हर बुरी से बुरी आंधी तूफ़ान में खड़ा रहे, वो एक दिन में नहीं बनता है। उन्नति धीरे-धीरे स्थायी रूप से होती है। `Z'16-183` R5912:5 (Hymn 229) आमीन

रात का गीत (3 दिसम्बर)

फिलिप्पियों 1:15 कुछ तो डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं और कुछ भली मनसा से।

आइये हम अपना बचाव करें ताकि सच्चाई के लिए बचाव का प्रयास खुद को महिमा देने के उद्देश्य से नहीं करें, बल्कि सच्चाई के प्रति अपने प्रेम, परमेश्वर के प्रति प्रेम, उनके लोगों और सच्चाई के भाइयों के प्रति प्रेम की वजह से करें। यदि हमारे को उकसाने का आधार प्रेम की आत्मा हो तो इसका प्रदर्शन सभी सहयोगी भाइयों के प्रति स्नेहमय, सौम्य, धैर्य और विनम्रता के साथ होगा। आइये हम सभी के प्रति भद्र बनें। आइये सारी कटाई का कार्य "आत्मा की तलवार" से, जो की परमेश्वर का वचन है, जो की तुरंत असर करने वाली और शक्तिशाली है, उस वचन के द्वारा करें। `Z'11-123` R4803:5 (Hymn 182) आमीन

रात का गीत (4 दिसम्बर)

1 कुरिन्थियों 3:17 ... क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

यहाँ पर सबक यह है की, मंदिर बनाने के ताल्लुक में, प्रभु की 'चर्च' जिसके मंदिर हम हैं, को दुनिया के लोगों, दुनिया के तौर तरीकों, दुनिया की सहायता और ज्ञान का इंकार करना है। जैसे सभी जीवित पत्थरों की पॉलिश, फिटिंग, तैयारी हमारे महान स्वामी, निर्माता, प्रभु की आँखों के नीचे उनके मार्गदर्शन में हो रही है, उसी तरह सभी दासों, सच्चाई के कार्यों में जुड़े सभी प्रतिनिधियों, को भी, जिन्होनें अपने ह्रदय का खतना किया है, खुद को सच्चा इस्राएली बनाकर प्रगट करना है। आइये हम यह याद रखें कि, कोई भी एक सच्चे इस्राएली की तरह इस कार्य में तब तक नहीं जुड़ सकता जब तक की वह अपने स्वामी और अपने निर्माता के साथ पूरा तालमेल न रखे और अपनी पूरी क्षमता के साथ सच्चाई को ठीक रीती से काम में न लाये ताकि अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न करे, जो लज्जित होने न पाए। `Z'99-204` R2512:5 (Hymn Appendix K) आमीन

रात का गीत (5 दिसम्बर)

2 पतरस 1:10 इस कारण हे भाइयों, अपने बुलाए जाने, और चुन लिये जाने को सिद्ध करने का भली भांति यत्न करते जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे।

हम नहीं गिरेंगे इसकी संभावना इन वस्तुओं को परिपूर्ण तरीके से करने में नहीं है, इसके बावजूद की मसीह की धार्मिकता हमारे सभी अपराधों और रोज मर्रा की

कमजोरियों को ढक देती है; लेकिन यदि हमारे विश्वास पर हम मसीह की निष्पाप धार्मिकता को जोड़ लें, तब हमने अपनी क्षमता के अनुसार इन सभी अनुग्रहों में उन्नति की है और हम अवश्य नहीं गिरेंगे। इस रीती से जब हम उन सब कामों को कर चुके जिसकी आज्ञा हमें मिली थी, तो हम केवल निकम्मे दास हैं। हमें अपनी धार्मिकता पर भरोसा करने का साहस नहीं करना है, बल्कि उस बड़े चादर पर जो की मसीह पर विश्वास में हमारी अपनी है, विश्वास करना है। और लगातार परिश्रम करने के द्वारा, हमें डरते और काँपते हुए अपने उद्धार के लिए प्रयत्न करना है। यह जानते हुए कि मसीह की धार्मिकता केवल उन्हीं को मिलती है जिनके अंदर पापों को छोड़ने की इच्छा है, और जो "वह पवित्रता जिसके बिना कोई मनुष्य परमेश्वर को नहीं देख सकता", उसे पाने की कोशिश करते हैं। `Z'97-148` R2155:6 (Hymn 183) आमीन

रात का गीत (6 दिसम्बर)

कुलुस्सियों 3:23,24 जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो। क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इसके बदले प्रभु से मीरास मिलेगी: तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो।

मसीही धर्म के सिद्धांतों की नींव इस ढंग से डाली गई है, जो कि दुनिया के सोच विचार के ढंग के विपरित है अर्थात, चर्च में सबसे महान वो है जो सबसे बड़ा सेवक है, यानि वही जो दूसरों को सबसे ज्यादा सहायता प्रदान करता है। चर्च का सबसे महान सेवक खुद चर्च का सिर यानि मुखिया (प्रभु यीशु मसीह) थे, जिन्होंने यहाँ तक किया कि, हमारे बदले में अपना जीवन भी दे दिया। और प्रभु के चेलों में से जिन्हें प्रभु की नज़र में बड़ा या महान बनने की चाहत है और साथी भाइयों के बीच

में आदर पाने की चाहत है, उन्हें ये आदेश दिया गया है कि, वे अपने स्वामी के पदचिन्हों का पीछा बहुत बारीकि से करें, और विनम्र हृदय से अपने भाइयों के लिए जीवन को बलिदान करने के लिए तैयार रहें। इसका मतलब केवल एक औपचारिक सेवा करना नहीं है; बल्कि इसका मतलब है वास्तव में सेवा करना। हमारे प्रभु का बलिदान, हम देखते हैं, केवल एक विचार या प्रेम और हित का दिखावा नहीं था; यह उनके जीवन को वास्तव में हमें खरीदने के मूल्य में दे देना था। ऐसा ही है हमारे साथ भी; हमें एक दूसरे से केवल नाम का प्यार नहीं करना है, और केवल नाम के लिए बातों में, कार्यों में, रोजगार में या किसी पदवी के लिए सेवा भी नहीं करनी है (उदाहरण के लिए शब्द 'मंत्री' सेवक का प्रतीक है), बल्कि हमें वचन और जीभ ही से नहीं, "पर काम और सत्य के द्वारा भी" प्रेम से एक दूसरे की सेवा करनी है। `Z'98-228` R2343:5 (Hymn 157) आमीन

रात का गीत (7 दिसम्बर)

मत्ती 10:20 क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो, परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है।

केवल वही जिन्हें परमेश्वर ने ठहराया है मतलब केवल वे जिन्हें परमेश्वर ने पुत्रत्व की पवित्र आत्मा दी है, सिर्फ वही लोग प्रभु के नाम का प्रचार करने के लिए नियुक्त किये गए हैं या अधिकृत हैं। पृथ्वी पर के सभी समारोह और सभी बिशप के सारे हाथ (सभी इसाई संस्थायें) मिलकर भी किसी को भी परमेश्वर के नाम पर बात करने के लिए अधिकार नहीं दे सकते हैं। हमारे प्रभु यीशु ने तब तक सेवा कार्यों को शुरू नहीं किया था, जब तक कि परमेश्वर ने उनका अभिषेक करके उनकी नियुक्ति नहीं की। प्रभु यीशु के बपतिस्मा और समर्पण के समय में उनके ऊपर परमेश्वर यहोवा की आत्मा आयी थी जिसने उनका अभिषेक किया था, उन्हें पवित्र किया था, और उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए अधिकृत किया था; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार

सुनाने के लिये उनका अभिषेक किया और उनको इसलिये भेजा था कि खेदित मन के लोगों को वे शान्ति दें; और बंधुओं के लिये स्वतंत्रता का और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करें; और यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करें; ताकि सब विलाप करने वालों को शान्ति दें। उसी पवित्र आत्मा को जो कोई भी पाता है, उसके द्वारा उसे वो अधिकार मिल जाता है कि जिनके सुनने के कान हैं उनको दिव्य योजना के बारे में उसने जो भी समझा है वह सब बताये और खासकर खेदित मन के लोगों को, टूटे मनवालों को, सब विलाप करने वालों को बताये; जो कि भारी मन से परमेश्वर को ढूंढ़ रहे हैं। यद्यपि प्रेरित पौलुस ये सूचित करते हैं की कलीसिया की महिला सदस्याएं सार्वजनिक रूप से प्रचार नहीं कर सकती हैं, लेकिन ये बात इस सच्चाई में कोई बाधा नहीं डालती है कि जिन्हें भी पवित्र आत्मा मिली है उन सभी का अभिषेक प्रचार करने के लिये हुआ है और वे सब जिनको जैसा अवसर मिलता है, और अपने अपने लिंग के अनुसार जिनकी जो सीमा है उसके अंतर्गत पढ़ा सकते हैं और कभी कभी व्यक्तिगत शिक्षा बराबर रूप से सार्वजनिक शिक्षा देने की तुलना में अधिक प्रभावशाली होता है। `Z'13-365` R5363:2 (Hymn 198) आमीन

रात का गीत (8 दिसम्बर**)**

मत्ती 5:45 ...वह भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है।

इस वचन में हम ये सीखते हैं कि जैसे हमारे परमेश्वर दयालु, स्नेही, कृपालु, उदार हैं, यहाँ तक कि कृतघ्न (जो धन्यवाद नहीं करते) लोगों पर भी, अधर्मियों पर भी, पापियों पर भी; वैसे ही हमें भी दयालु, उदार, स्नेही और भलाई करने वाला होना है पूरी मानवजाति के लिए, और खासकर विश्वास के घराने के लिए। परमेश्वर का यह

पक्ष हमारे हृदय को छू जाता है और हमें प्यार के परमेश्वर के बारे में गहराई से पढ़ाता है, और हम यह महसूस करते हैं कि यही एकमात्र सच्चे और प्यारे परमेश्वर हैं। और हम जान जाते हैं कि हमारी सभी पुरानी गलतफहमियाँ झूठी थीं, प्रेमरहित थीं, काल्पनिक थीं -- वे सब हमारे खुद के बनाये हुए नकली ईश्वर थे, वे -- जिन्हें सभ्य और शिक्षित समाज केवल कलम और स्याही से ही बना लेता है, तस्वीर के रूप में, जो कि मूर्तिपूजकों से भी ख़राब है, जो कम से कम लोहे, ताम्बे, पत्थरों और मिट्टियों की मूर्ति बनाकर तो पूजते थे। आओ हम जो अच्छे है -निश्चय पूरा होने वाले परमेश्वर के वचन, उसे थामकर, कसके पकड़कर रखें! आओ हम अंधकार के युगों के दौरान मनुष्यों के बनाये हुए सिद्धांतों को त्याग दें, जिसने दिव्य संदेशे को बहुत ही अनुचित ढंग से प्रस्तुत किया है। हमें केवल अपने प्रभु के वचनों पर ध्यान करना है -"तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हे स्वतंत्र करेगा"। `Z'14-172` R5474:5 (Hymn 165) आमीन

रात का गीत (9 दिसम्बर**)**

मत्ती 6:10 'तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।

यह प्रार्थना 1900 वर्षों से चली आ रही है, और परमेश्वर के बच्चों ने अभी तक उनका राज्य नहीं देखा है। क्या हमें ये प्रार्थना रोक देनी चाहिए? बिल्कुल भी नहीं। हमें पूरा आश्वासन है कि, परमेश्वर का राज्य निश्चित ही आएगा। इस समय तो वह दरवाजे के पास ही खड़ा है। परमेश्वर का राज्य पूरी तरह से स्थापित होगा और वह समय आता है जब पृथ्वी पर कोई भी भक्तिहीनता न होगी, कोई विश्वासघात नहीं करेगा, ठीक वैसे ही जैसे अभी कोई भी स्वर्ग में भक्तिहीनता और विश्वासघात नहीं करता है। हमारे प्रार्थना करने से परमेश्वर का राज्य उनकी योजना के निश्चित

समय के एक मिनट भी पहले नहीं आएगा, लेकिन हम परमेश्वर को यह आश्वासन देने के लिए प्रार्थना करते हैं कि हम बेसब्री से उनके राज्य का इन्तज़ार कर रहे हैं और उम्मीद करते हैं कि वह उनके वादे के अनुसार, पूरी तरह से मेल खाता हुआ होगा। इस तरह से बिना उदासीन हुए निरंतर प्रार्थना करके परमेश्वर के बच्चे खुद को मजबूती दे रहे हैं कि, परमेश्वर का महिमा वाला राज्य प्रगट होगा --और शीघ्र ही होगा! तब वो सभी जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के चरित्र और स्वरुप में खुद को ढाला है, वे प्रभु यीशु के साथ राज्य करने का गौरव उनके राज्य में पायेंगे। Z'15-185` R5710:4 (Hymn 66) आमीन

रात का गीत (10 दिसम्बर**)**

इब्रानियों 13:6 ... "प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है"।

दुनिया प्रायः परमेश्वर के विनम्र "छोटों" में से किसी को ऐसी परिस्थितयों में जिसमें दिलेर भी हिम्मत हार जाते हैं, शान्त देखकर अचरज में हो जाती है। लेकिन परमेश्वर को ही महिमा देने वाली जिन्दगी के रास्तों में चलने के लिए और उनके अनुग्रह को बढ़ाकर दिखाने के लिए, और रास्ते में मिलने वाली सभी परिक्षाओं और परेशानियों का सामना-- बुद्धि, साहस से करने के लिए; स्वर्ग के राजा का प्रतिनिधि होने के नाते, और आनन्द की आत्मा में अपने राजा से मिलने के लिए और हमारे नाना प्रकार के सभी क्लेशों में आनन्दित रहने के लिए --यह जरूरी है कि, हमारे ह्रदय परमेश्वर से मिले रहें, हमारी अपनी कोई इच्छा न हो, परमेश्वर की मर्जी से हमारा जीवन चले और मनुष्य का भय जो फन्दा बन जाता है उसपर हम जय पाएं। यह हम अपनी शक्ति से नहीं पा सकते परन्तु केवल परमेश्वर की शक्ति से पा सकते हैं। हमें यहोवा से डरना सिखाया गया है, कमजोर नश्वर लोगों से नहीं। धर्मी लोग

सिंह की तरह निडर, कबूतर की तरह भोले और मेम्ने की तरह आज्ञाकारी होते हैं। यह अनोखा मिश्रण --निडरता, भोलापन और आज्ञाकारिता सभी मसीही के चरित्र में होना चाहिए। Z'14-282 R5540:5 (Hymn 38) आमीन

रात का गीत (11 दिसम्बर**)**

यूहन्ना 5:36 ...यही काम जो मैं करता हूं, वे मेरे गवाह हैं कि पिता ने मुझे भेजा है।

जो चमत्कार हमारे प्रभु यीशु ने किए उनका उद्देश्य केवल उनकी पहचान को स्थापित करना था, वे इस विचार से नहीं किए गए थे कि सारी दुनिया और चर्च की चंगाई का कोई नमूना या पूर्व उदाहरण स्थापित किया जाए। बाइबिल में प्रभु के महान चंगाई के समय को 'फिराव का समय' नियुक्त किया गया है। जब वो समय आएगा, तब हजार साल का राज्य स्थापित होगा, देश--देश की चंगाई एक महान कार्य होगा, और ये चंगाई न केवल शारीरिक होगी बल्कि मानसिक और नैतिक भी होगी, जो कि पूरी मानवजाति को वापस उसी अवस्था में लौटा लाएगी जो अदन की वाटिका में खो गयी थी, और ऐसा अनुभव के द्वारा ज्ञान के बढ़ने से होगा। `Z'05-29` R3495:5 (Hymn 212) आमीन

रात का गीत (12 दिसम्बर**)**

नीतिवचन 3:3 कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उनको अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना।

किसी को भी सत्य के और धार्मिकता के सिद्धांतों को अपने मन के आगे हमेशा रखने के लिए पूरी तरह से ईमानदार स्त्री या पुरुष बनना होगा, मतलब वैसा कोई

बनना होगा जिनमें सच्चाई, पवित्रता और भलाई हमेशा उनके नियंत्रण में रहती है। लेकिन कोई भी एक व्यक्ति जिसने केवल इन सिद्धांतो को अपने नियंत्रण में रखा है उसे ज्यादा से ज्यादा कृपा के गुण में बढ़ना होगा। वरन हमें उन को अपने गले का हार बनाना है। यहाँ पर सुझाव हार या जड़ाऊ नेकलेस का है। जिस प्रकार आदमी अपने गले के चारों ओर टाई पहनता है और अच्छे से दिखाई देने वाली जगह पर हीरे का आभूषण या टाई पिन लगाता है, वैसे ही हमारे चरित्र के ये सब गुण भी कीमती आभूषण हैं। हमें अपने चरित्र को भी महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए; क्योकि वे हमें बेहतर बनाने में मदद करेंगे, और परमेश्वर के ज्यादा ग्रहणयोग्य बनने में मदद करेंगे। एक आभूषण के प्रदर्शन के लिए बेहतर जगह गर्दन है। चरित्र एक गहना है जो विशेष रूप से विशिष्ट और सजावटी है। इसलिए हमें चरित्र के इन महान गुणों को इस तरह से कसना चाहिए कि वे गुण जीवन के सभी मामलों में प्रगट हो सकें। हम खरीदें या बेचें, या जो कुछ भी हम करते हैं, हमें चाहिए कि चरित्र के इन गहनों को पहने रहें। जब हम इन चरित्र रूपी गहनों को हर समय पहने रहेंगे तब वे प्रगट रूप से बाहर से ही दिखा देंगे की अमुक स्त्री या पुरुष का चरित्र क्या है। जब-जब हम दूसरों से मिलें तो ये चरित्र हममें प्रगट रूप से दिखाई देने चाहिए। हमारे व्यवहार में कुछ भी निंदा के योग्य, बुरा और तुच्छ नहीं होना चाहिये। Z'13-275 R5309:2 (Hymn 311) आमीन

रात का गीत (13 दिसम्बर)

इफिसियों 5:16 ...समय को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं।

यहाँ पर अंग्रेजी के वचन का सही अनुवाद ये होगा कि समय को फिर से मोल ले लो, क्योंकि दिन बुरे हैं। इस संदर्भ में पास्टर रसल इसकी व्याख्या में कहतें हैं कि यह वचन समय को वापस खरीदने की ओर संकेत कर रहा है, जैसे की समय पहले से ही गिरवी रखा गया हो। हाँ! ऐसा ही है। इस जीवन की चिंताएँ, इसकी जरूरतें,

दुनिया के रीतिरिवाज, हमारी गिरी हुई आदतें, ये सब मिलकर हमारे जीवन के हर घंटे को इस जीवन से सम्बंधित बातों में ही सोख लेते हैं। जबकि नई सृष्टि के रूप में, हमारी नई आशाओं और लक्ष्यों और प्रयत्नों को बढ़ियाँ से ऊपर की वस्तुओं पर यानि स्वर्गीय स्थानों में और हमारे राजा के मामलों पर केन्द्रित रहना है। नई सृष्टि के रूप में जो आशीषें, वादे और जो समर्थन हमारे हैं, उन्हें दोहराने और तरोताजा करने के लिए और पढ़ने के लिए आवश्यक समय को हम कहाँ से हासिल कर सकते हैं? और यह शुभ समाचार दूसरों को सुनाने के लिए हम कहाँ से समय को हासिल कर सकते हैं? यदि हम दुनिया की आत्मा को हमारा मार्गदर्शन करने कि अनुमति दे दें, तो फिर हमारे पास इन सबके लिए कुछ भी समय नहीं बचेगा और हम जरूर हार जायेंगें। लेकिन परमेश्वर के मुर्ख नहीं पर बुद्धिमान बच्चों की तरह, हमें स्वर्गीय वस्तुओं को आत्मिक आँखों से देखना है और उनके महान महत्व की सराहना करनी है, और अपने सारे सांसारिक दिलचस्पी और हितों को और रिवाजों और लक्ष्यों को स्वर्गीय वस्तुओं के लिए बलिदान करने को हमेशा तैयार रहना है। इस प्रकार हम फिर से उस समय को वापस खरीद सकते हैं, जिसे हम पहले दुनियादारी की वस्तुओं पर खर्च किया करते थे, ताकि हम आगे से उसी समय को अपनी और दूसरों कि नई सृष्टि के लाभ के लिए खर्च कर सकें और हमारे प्रभु और स्वामी यीशु मसीह की सेवा में खर्च कर सकें जिनको हमने अपना सब कुछ समर्पित कर दिया है। हमारा सब कुछ जो हमने प्रभु को समर्पित किया है, वह कितना छोटा सा है, खासकर ईमानदारी से देखा जाए तो अभी के जीवन के लिए जो भी अनिवार्य आवश्यकताएं हैं, उन सबके ऊपर और उन सब से भी ज्यादा जरूरी यह है कि, हम समय को दुनिया में से मोल लेकर अपने प्रभु के लिए खर्च करें। Z'08-185 R4190:2 (Hymn 210) आमीन

रात का गीत (14 दिसम्बर)

1 यूहन्ना 4:18 प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है... ।

परमेश्वर के प्रति एक उचित भय या श्रद्धा है जिसे हम कभी भी नहीं खोना चाहेंगे और हमसे हमारे स्वर्गीय पिता और हमारे उद्धारक प्रभु यीशु का अपमान न हो जाये, इस श्रद्धामय - भय को भी, हम कभी नहीं खोना चाहेंगे। परिपूर्ण प्रेम इस श्रद्धामय - भय को बाहर नहीं करेगा, बल्कि इसे बढ़ा देगा। परिपूर्ण प्रेम जिस भय को निकालता है, वो डर है - कायरता का डर, एक गुलामी का डर या परमेश्वर का या शैतान का डर, या गिरे हुए स्वर्गदूतों, या मनुष्यों का डर और ये डर की वे हमारा क्या कर सकते हैं। ज्ञान, विश्वास, साहस और विजय को पाये बिना परिपूर्ण प्रेम नहीं पाया जा सकता। सभी दिव्य प्रबंधो के अभ्यास के परिणामस्वरूप ही हम परमेश्वर के निकट आ पाते हैं और सही मायने में उनका आभार प्रगट कर पाते हैं और उनके अनुग्रह से भरे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए परमेश्वर की सर्वशक्तिमान शक्ति की सराहना कर पाते हैं । Z'09-122 R4379:1 (Hymn 305) आमीन

रात का गीत (15 दिसम्बर)

2 कुरिन्थियों 4:10 हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिये फिरते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो।

इस वचन में पौलुस हमारे मनुष्य वाले शरीर के बारे में बात कर रहे हैं। नई सृष्टि हमारे इस शरीर की मालिक है। दुनिया के लोगों के लिए दो व्यक्तित्व नहीं होता, केवल एक ही रचना होती है। नई सृष्टि का ये गुण केवल उन्हीं लोगों के लिए है, जो पवित्र आत्मा के द्वारा उत्पन्न हुए हैं। पुराना शरीर तो कष्ट में हैं, परन्तु नई

सृष्टि आनन्दित है, सेवा में प्रसन्न है, दिन-प्रतिदिन परमेश्वर का धन्यवाद करती है और सभी क्लेशों का आदर करती है, क्योंकि नई सृष्टि ये जानती है की, इन क्लेशों से कहीं अधिक महिमा हमारा इंतज़ार कर रही है। इस प्रकार से प्रभु यीशु मसीह का जीवन भाइयों पर और पूरी दुनिया पर हमारे द्वारा प्रकट किया जाएगा। दुनिया नहीं समझ सकती। वे कहेंगी, यदि मैं ऐसी परीक्षा में तुम्हारी जगह होता तो अत्यंत दुखी होता। लेकिन तुम तो आनन्दित हो! इसलिए वे नहीं समझ सकते हैं। लेकिन हमारे जीवन में एक नयापन है जिसकी प्रशंशा दुनिया नहीं कर सकती है। जो इसकी तारीफ़ कर सकते हैं उन सभी को अनुग्रह और ज्ञान में प्रतिदिन बढ़ना होगा। हमें अपने चरित्र और शरीर में ज्यादा से ज्यादा प्रभु यीशु के जीवन को दर्शाना होगा। इसलिए हमारे अन्दर यीशु की आत्मा ज्यादा से ज्यादा मात्रा में प्रगट होनी चाहिए, हमें ज्यादा से ज्यादा प्रभु का कार्य करना चाहिए, ज्यादा से ज्यादा यीशु के जैसा बनना चाहिए -- और ये सब मिलकर हमें उस महिमा के लिए तैयार करेंगें जो पर्दे के उस पार है, जब नई सृष्टि पूरी हो जाएगी और नई सृष्टि की सारी परिपूर्णता और महिमा हमारी हो जाएगी। `Z'15-121` R5671:6 (Hymn 13) आमीन

रात का गीत (16 दिसम्बर)

यूहन्ना 10:11 ...अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।

हमारे प्रभु यीशु चाहते थे कि, लोग समझें की जो जीवन वो बहुत जल्द देने वाले हैं, वो उनके द्वारा स्वेच्छा (अपनी मर्जी से) से समर्पित किया गया था। यह जरूरी था कि, उनके चेले इस बात को जाने, सिर्फ इसलिए नहीं की चेले अपने प्रभु की ज्यादा महिमा करें, बल्कि खासकर इसलिए कि वे समझें की प्रभु यीशु ही उद्धारकर्ता, छुड़ौती दिलाने वाले हैं, जिनका स्वेच्छा से किया गया बलिदान हमारे पापों के लिए है और उन्होंने इस बलिदान के द्वारा हमारे पूर्वज आदम और उसके सारे वंश को

छुटकारा दिलाया है। इस परिणाम पर भरोसा करने के लिए उनके चेलों को प्रभु के पुनरुथान पर भी भरोसा करना होगा--क्योंकि पिता इतने प्रसन्न थे कि, उन्होनें यहाँ का अधिकार और शक्ति भी प्रभु यीशु को दे दिया। हमारे प्रभु यीशु ने ये स्वीकृति दी है कि, सारे अधिकार, सारी शक्ति जो उनके पुनरुथान से जुडी है, वो उन्हें अपने पिता से मिली है। वे आँख मूँद के, निःसंदेह केवल पिता पर ही भरोसा करते थे, और इसलिए वे झुण्ड के लिए अपना जीवन भी दे पाए। यही उन सब के लिए भी सच होगा जो उनके पद-चिन्हों पर चलेंगें। इतना विश्वासी होने के लिए, की हम अपना जीवन भी दे दें, ये आवश्यक है कि, हमारा पूरा विश्वास पिता पर होना चाहिए और उनके महान उद्धार की योजना पर जो कि, हमारे प्रभु के बलिदान पर टिकी हुई है। हमारे दिमाग में यदि यह बात साफ़ तरिके से समझ आ जाए तो हमें हर परिस्थिति और जरूरत के समय में अनुग्रह और शक्ति मिलेगी। `Z'05-91` R3528:6 (Hymn 257) आमीन

रात का गीत (17 दिसम्बर)

न्यायियों 7: 20 तब तीनों झुण्डों ने नरसिंगों को फूंका और घड़ों को तोड़ डाला; और अपने अपने बाएं हाथ में मशाल और दाहिने हाथ में फूंकने को नरसिंगा लिए हुए चिल्ला उठे, 'यहोवा की तलवार और गिदोन की तलवार'।

अभी जो बुराई बढ़ रही है उसके खिलाफ लड़ाई करने के लिए जिन ख़ास लोगों को प्रभु यीशु उपयोग में लाएंगे, उनके लिए हमारे कप्तान प्रभु यीशु ने खास आदेश दिए हैं। हममें से हर एक को हमारे उद्धार के कप्तान प्रभु यीशु के उदाहरण का अनुकरण करना है। पहला, हमें नरसिंगा बजाना है - इसका मतलब हुआ सच्चाई का ऐलान करना, और ये बताना की सच्चाई की आत्मा की तलवार यहोवा की है और उनके

अभिषेक किये गए पुत्र की है; दूसरा, हमें अपने घड़े को तोड़ डालना है ताकि हमारी रौशनी बाहर चमके। मिटटी का घड़ा हमारी शारीरिक देह को दर्शाता है। हमारी रौशनी का तेज बाहर चमकाने के लिए मिटटी के घड़े को तोड़ना यह दर्शाता है कि हम रोमियो 12:1 वचनों के अनुसार परमेश्वर को भावता हुआ जीवित बलिदान करें, जिसके बारे में हमारे प्रेरित पौलुस ने हमसे विनती करके कहा है कि - "इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है"। (रोमियो 12:1,2) हमने देखा है की हमारे मुख्य कप्तान ने अपने मिट्टी के घड़े को क्या तोडा था (अपनी देह को क्रूस पर बलिदान करके) और क्या रौशनी बाहर चमकी थी। हमारा सबसे ऊँचा लक्ष्य उन्हीं के उदाहरण का पालन करना होना चाहिए, उन्हीं के पदचिन्हों पर चलना होना चाहिए, और जैसे उन्होंने हमारे लिए अपना जीवन बलिदान किया वैसे ही हमें भी अपना जीवन सच्चाई के भाइयों के लिए बलिदान करना चाहिए। इसी बीच में तुरही बजाते हुए उन्नति करना है और हमारे यहोवा और कप्तान का नाम पुकारते हुए सच्चाई की आत्मा की तलवार को चलाते रहना है। इसका परिणाम विजय होगा, परमेश्वर के शत्रु पूरी तरह से पराजित हो जायेंगे। `Z'07-331` R4083:5 (Hymn 24) आमीन

रात का गीत (18 दिसम्बर)

भजन संहिता 145:20 यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा करता, ...

जब हम परमेश्वर की दिव्य दया और ख्याल और उनकी सभी भेंट को समझते हैं तो हमारा उनपर भरोसा बढ़ जाता है और उनके आत्मिक पुत्र होने के नाते हम उनपर ज्यादा भरोसा रखते हैं। क्योंकि परमेश्वर ने हमसे तब इतना प्रेम किया जब हम पापी थे कि, अपना इकलौता पुत्र हमारे छुटकारे के दाम में दे दिया, तो अभी जब हम पापी नहीं रहे, अजनबी नहीं रहे, विदेशी नहीं रहे तब तो पिता हमसे और

भी ज्यादा प्रेम करते हैं क्योंकि हमने बलिदान की वाचा बाँधकर उनकी मर्जी करने के लिए समर्पण किया है और हमारे उद्धारकर्ता के पदचिन्हों पर चलने का प्रयत्न कर रहे हैं। ठीक इसी तरह से, जब पिता ने शारीरिक इस्राएलियों की रुचियों का इतना ख्याल रखा था तो हम जो आत्मिक इस्राएलि हैं और जिन्होंने उनके साथ वाचा बाँधकर रिश्ता जोड़ा है, कि हम शरीर के पीछे नहीं परन्तु आत्मा के चलाये चलेंगे और अगर हमारे अंदर कोई छल नहीं है तो अवश्य वो हमारा ज्यादा ख्याल रखेंगे। यह वचन - "यहोवा अपने सब प्रेमियों की रक्षा करता है" भी इसी ख्याल से लिखा गया है। यह सच है कि पिता को दुनिया से सहानुभूति है जिसकी वजह से उन्होंने उचित समय में उद्धार दिया और सभी उद्धार पाये हुए लोगों के ऊपर दिव्य प्रेम और देखभाल को उनके हित के अनुसार प्रगट किया जायेगा, लेकिन अभी इस सुसमाचार के युग में दिव्य आशीषें केवल उन्हीं के लिए हैं जो चर्च का हिस्सा बनेंगे, मसीह के अंग बनेंगे; ये वे लोग हैं जो कि घर या जमीन, माता-पिता या बच्चों या खुद से भी ज्यादा प्रेम परमेश्वर से करते हैं। इसलिए, वह सभी जो अपने दिलों में दृढ़ता से परमेश्वर के प्रति अपनी वफादारी को स्वीकार करते हैं और अपना विश्वास और भरोसा उनपर रखते हैं, वे निश्चित रह सकते हैं कि सभी चीजें उनकी भलाई के लिए हो रही हैं - सांसारिक भी और आत्मिक भी। `Z'05-332 R3658:5 (Hymn 252) आमीन

रात का गीत (19 दिसम्बर)

यूहन्ना 7:37 ...यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए।

यह वचन एक पाठ की ओर इशारा करता है कि, प्रभु यीशु मसीह के पास आने से पहले किसी को भी प्यासा होना चाहिए--उसे प्रभु से जो मिलने वाला है, उसकी कदर होनी चाहिए --'जल' जो की ताज़गी का चिन्ह है, अनन्त जीवन का चिन्ह है (जल हमें प्रभु यीशु से मिलने वाला है जिसकी हमें कदर करनी है और प्यास होनी है)।

इसका मतलब यह है कि, हम सबको यह सिखना है कि हमलोग पापी हैं, मृत्यु दण्ड के अन्दर हैं, और भविष्य में जीवन की कोई उम्मीद नहीं, सिवाय प्रभु यीशु मसीह के द्वारा। प्रभु यीशु के निकट आने के लिए हमें विश्वास का रास्ता लेना होगा। हमारी प्यास, हमारी अभिलाषा है। हम, हमारे लिए सर्वोचित्त दिव्य संदेश को पीते हैं। "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर", तेरा वचन सत्य है। जल सत्य वचन का चिन्ह है। यह आशीष के लिए किया गया वादा है और केवल उनके लिए है जो "धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे हैं"। और वादा यह है कि, जो प्यासे होंगें वे तृप्त किये जायेंगें। यह यूहन्ना 4:14 वचन से भी तालमेल रखता है -"परन्तु जो कोई उस जल में से पियेगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा"। `Z'08-44` R4132:4 (Hymn 290) आमीन

रात का गीत (20 दिसम्बर)

फिलिप्पियों 3:2,3 ...उन काट कूट करने वालों से चौकस रहो। क्योंकि खतना वाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं और शरीर पर भरोसा नहीं रखते।

किसी भी प्राकृतिक मनुष्य का हृदय पूरी तरह से खतना हुआ नहीं है,सब पाप में गिरे हुए पीढ़ी से हैं। और जिनके पास ऐसा हृदय है वे दुनिया के लिए मर चुके हैं। इनकी आशाएँ, लक्ष्य, आकांक्षाएँ सूली पे चढ़ चुकी है और वे परमेश्वर के प्रति ही जीवित हैं। यदि कोई है जिसको ऐसे हृदय के प्रति अहसास है, तो यह बात परमेश्वर के द्वारा उसके प्रति मंजूरी को प्रमाणित करता है और उनके सभी बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञा के वारिस होने को दर्शाता है--और यदि ऐसा ही रहा तो वे प्राण देने तक भी विश्वासी रह सकते हैं। लेकिन इन सबको भी खासकर शत्रुता और फुट डालने की आत्माओं से सावधान हो जाना चाहिए, जो कि इन अन्तिम बुरे दिनों में,

आग जैसी परिक्षाओं में और जलते हुए तीरों के द्वारा उन्हें गिराने में सक्षम हैं। और ऐसे समय में केवल वही खड़े रह सकते हैं जो आत्मा और सच्चाई में प्रार्थना करते हैं। पहले से ही सहनशक्ति की परिक्षा कुछ लोगों के लिए बहुत कठिन साबित होती है, और निश्चय है कि, यह परिक्षा और भी भारी होने वाली है। "तुम ने पाप से लड़ते हुए उस से ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लहू बहा हो (इब्रानियों 12:4)। जिन लोगों ने स्वंय को पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित नहीं किया है उनके लिए इन दिनों में बुराई के खिलाफ खड़े रहने के लिए कोई आश्वासन नहीं है। पर जिन्होंने स्वंय को पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित किया है, और जो अभी भी अपनी वाचा पर स्थिर हैं, वफादार हैं; उनके पास मसीह में आनन्दित रहने का कारण है, जिनका कि, अनुग्रह ही उनके लिए बहुत है और जिनके बहुमूल्य लहू के मोल में उनकी छुड़ौती खरीदी गई है। `Z'94-219` R1671:4 (Hymn 48) आमीन

रात का गीत (21 दिसम्बर)

नीतिवचन 29:2 जब धर्मी लोग शिरोमणि होते हैं, तब प्रजा आनन्दित होती है; ...।

"इस वर्तमान बुरे संसार" के मनुष्यों के किसी भी राज्य पर इस वचन को केवल आंशिक रुप से ही लागू किया जा सकता है। क्योंकि मनुष्यों के राज्य पर शैतान ने सरदार बनकर नियंत्रण पाने की कोशिश की है। मनुष्य जाति में गहराई से समाई हुई कमजोरियों के कारण मनुष्यों में से सर्वश्रेष्ठ लोग भी संपूर्ण धार्मिकता से दूर हैं। और इसके परिणामस्वरूप नीतिवचन 29:2 वचनों में जो भविष्यद्वाणी की गयी है, उसे अभी के समय की कोई भी सरकार, कोई भी अपरिपूर्ण मनुष्यों की सरकार पूरा नहीं कर सकती है। शुरू से अंत तक, सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में यह संकेत दिया गया है की, परमेश्वर ने मनुष्यों के बीच में एक राज्य स्थापित करने का वादा किया है और इम्मानुअल (प्रभु यीशु) की सरकार में पृथ्वी के सभी परिवारों को आशीष

मिलेगी। यही कारण है कि, अभी तक लोग ये प्रार्थना करते हैं "तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो” (मत्ती 6:10)। यही कारण है कि, प्रेरित भी रोमियो 8:22,19 वचनों में ये घोषणा करते हैं की "सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती" हुई परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है। परमेश्वर के पुत्र, छोटी झुण्ड, अपने शिरोमणि प्रभु यीशु के साथ थोड़ी देर में धर्मियों का गठन करेंगे जो की हमारे पापों के प्रायश्चित के उत्तम बलिदान (प्रभु यीशु की छुड़ौती) पर आधारित है। ये लोग पूरे संसार पर दिव्य इंतज़ामों के अंतर्गत पूरे अधिकार से, पूरी सामर्थ्य से अपने नियंत्रण में अपनी सरकार चलाएंगे। उस समय के बारे में और उस महान राजा जो कि देह अर्थात कलीसिया का सिर है (कुलुस्सियों 1:18), उसके बारे में यह लिखा है "उसके दिनों में धर्मी फूले फलेंगे" (भजन-संहिता 72:7)। उसके दिनों में शैतान को पकड़ के हजार वर्षों के लिये बाँध दिया जायेगा ताकि वह हजार वर्ष के पुरे होने तक जाती जाती के लोगों को फिर न भरमाये (प्रकाशितवाक्य 20:2,3)। उसके दिनों में धार्मिकता और सच्चाई के सभी प्रभावों को ढीला छोड़ा जायेगा ताकि "परमेश्वर की महिमा के पहचान की ज्योति" से पूरी दुनिया डूब जाये (2 कुरुन्थियों 4:6)। उन धन्य हालातों में जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत (मुफ्त में) ले (प्रकाशितवाक्य 22:17)। Z'03-446 R3285:5 (Hymn 149) आमीन

रात का गीत (22 दिसम्बर)

भजन संहिता 51:15 हे प्रभु, मेरा मुंह खोल दे तब मैं तेरा गुणानुवाद कर सकूंगा।

इस वचन का तात्पर्य यह है कि जब तक पहले परमेश्वर अपनी दया और सच्चाई के द्वारा हमारा मुँह न खोलें, कोई भी सही रीति से परमेश्वर की स्तुती के लिए

अपना मुँह नहीं खोल सकता, और न ही बिना बुलावे के अंधकार से अदभुत ज्योति में आ सकता है; वरन कोई कैसे ये उम्मीद कर सकता है कि वह शुभ समाचार, आनन्द का सन्देश बोले जो कि सभी लोगों को देना है? इसका मतलब यह भी है कि वे सभी लोग जिनके पापों को माफ़ी मिल गई है, उनकी आत्मा की यह अवस्था होनी चाहिए की वे अपना सब कुछ परमेश्वर को समर्पित कर सकें, और तभी उनके मुँह खोले जाएंगें, ताकि परमेश्वर की सच्चाई के वचन और उनका अनुग्रह दूसरों की शिक्षा और आशीष के लिए इनके द्वारा बाहर निकले। क्योंकि लिखा है, "तेरे होठों में अनुग्रह भरा हुआ है" (भजन संहिता 45:2); "और उसने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है" (भजन संहिता 40:3) जबकि ये वचन हमारे उद्धारकर्ता के लिए सही है, तो फिर वे सभी चर्च के सदस्यों के लिए भी जो उनके शरीर का अंग हैं, उपयुक्त है। और वो सभी जो यीशु के अंग होने का दावा करते हैं परन्तु जिनके मुँह कभी भी नहीं खोले गए हैं, उन्हें अपने प्रभु के द्वारा स्वीकारे जाने के लिए परमेश्वर से सवाल पुछने का पूरा हक़ है। `Z'03-383` R3255:3 (Hymn 319) आमीन

रात का गीत (23 दिसम्बर)

प्रकाशितवाक्य 3:21 जो जय पाए मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया।

जिन्हें परमेश्वर के ऊपर विश्वास है, उन्हें अभी भी कुछ लड़ाइयाँ जीतनी है, लेकिन यह युद्ध सांसारिक हत्यारों से नहीं लड़ना है। उनकी जीत हालाँकि उन्हीं सिद्धांतों पर आधारित है जिन सिद्धांतों ने दाऊद राजा के लिए प्रशंशात्मक ढंग के कार्य किए थे। परमेश्वर पर विश्वास का आधार है - यह महसुस करना कि, जो लड़ाई हम कर

रहें हैं उसके कारण को परमेश्वर के द्वारा स्वीकृति मिली हुई है। उनके विश्वास के योग्य साहस -- जो कि पिछले छोटे शत्रुओं पर जय पाकर धीरे--धीरे बढ़ा है, और दाऊद राजा की भी वही स्थिति थी, यह बढ़ा हुआ साहस सबसे भंयकर विशाल शत्रु से भी लड़ने की हिम्मत देने में हमारी मदद करेगा। `Z'15-104` R5662:4 (Hymn 200) आमीन

रात का गीत (24 दिसम्बर**)**

लूका 2:10 ...देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा।

जहाँ कहीं भी परमेश्वर के उद्धार के प्रेम की कहानी कही गयी है, चाहे बहुत से झूठे वचनों के साथ अस्पष्ट रूप से ही कही गयी हो, अधिक या कम अपने साथ आशीष ही लेकर आयी है। यहाँ तक की जो लापरवाही से इन वचनों को सुनते हैं और जो वचनों का पालन नहीं करते उनके लिए भी ये (उद्धार की कहानी) आशीष ही लायी है और जो आंशिक रूप से सुनते हैं और आंशिक रूप से पालन करते हैं उनके लिए भी ज्यादा बड़ी आशीष लेकर आयी है। लेकिन इसके (उद्धार की कहानी के) द्वारा सबसे बड़ी आशीषें छोटी झुण्ड के लिए हैं, जो कि राजपदधारी याजकों का समाज है, जो कि दिव्य इंतज़ाम की आत्मा के अंदर में आये हुए हैं, जिन्होंने बहुमूल्य लहू में विश्वास के द्वारा खुद को धार्मिक महसूस किया है, जिन्होंने प्रभु यीशु के न्योते के साथ तालमेल रखते हुए आगे बढ़कर खुद को जीवित बलिदान के लिए भेंट में चढ़ाया है ताकि वे वर्तमान में मसीह के दुखों में सहभागी हो सकें और थोड़ी देर में उनके राज्य की महिमा में सहभागी हो सकें। वे मुख्यत: इसी वर्ग (छोटी झुण्ड) के हैं जो अंधकार के युगों में काले बादलों के पीछे लम्बे समय से छुपे हुए असत्य को पहचानकर परमेश्वर के वचनों के द्वारा सत्य के खुलासा के कारण आनंदित हैं; वे मुख्यतः इसी वर्ग (छोटी झुण्ड) के हैं जो अभी दिव्य योजना और

दिव्य प्रेम की लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई और गहराई को समझ कर आनंदित हैं जिसके अंतर्गत पूरी मानवजाति को (प्रभु यीशु के लहू से) खरीद लिया गया है और अंततः उन सभी को अभी की दुर्दशा से उठाया जायेगा जो परमेश्वर के हज़ार साल के राज्य में अनुकूल स्थितियों के अंतर्गत वे सब उस चरित्र में उन्नति करेंगे जिसे अनंत जीवन देने के लिए परमेश्वर सब में चाहते हैं -- यानि धार्मिकता से प्रेम और बुराई से बैर। `Z'02-364` R3115:6 (Hymn Appendix S) आमीन

रात का गीत (25 दिसम्बर)

लूका 2:11 कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।

आइये हम साल के इस खुशहाल मौसम में आनन्दित हों और हमारे दिल दिव्य प्रेम और उदारता की सराहना से भर जाये जिसकी वजह से हमें मसीहा का बड़ा तोहफा परमेश्वर ने दिया है और इस तरह से अप्रत्यक्ष रूप से उस राज्य का और हमारे उस राज्य में हिस्सेदारी का ज्ञान दिया है जो राज्य अभी तक नहीं आया है लेकिन उसी राज्य में हमारे द्वारा पूरी दुनिया को आशीष मिलेगी। हमने (परमेश्वर के प्रेम का उपहार - मसीहा) मुफ्त में पाया है, इसीलिए आइये हम भी (मसीहा का सुसमाचार) मुफ्त में बांटे और इस प्रकार से हमारे प्रभु और स्वर्गीय पिता का अनुकरण करें। कुछ लोगों के पास बहुत तरह के बहुत सारे उपहार देने के कुछ अवसर हो सकते हैं। परमेश्वर के प्रेम का संदेश (मसीहा का सुसमाचार) सबसे कीमती चीज़ है जिसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने साथियों के सामने पेश करने का विशेषाधिकार सभी को होगा। हम उन्हें इस अनुग्रह के धन का जानकार, बनाकर जो की युगों की दिव्य योजना में पेश किया गया है, परमेश्वर के प्रेम का उपहार अपने साथियों को दे सकते हैं। हमें भी कभी ये उपहार मिला है। और जब हम दूसरों को

ये उपहार भेंट करते हैं, तब आइये हम इस बात को ध्यान में रखें कि चाहे हमारे पास अपने प्रिय दोस्तों और पड़ोसियों और प्रियजनों को देने के लिए कुछ हो या नहीं, हम उनको परमेश्वर के प्रेम का उपहार जरूर दे सकते हैं। और इस उपहार को उनसे बांटने के हमारे तरीके और व्यवहार में यह दिखना चाहिए कि हम कैसे इसे (परमेश्वर के प्रेम के तोहफे - मसीहा को) माणिक से भी ऊपर मानते हैं, और इस तरह हम परमेश्वर के उपहार की सराहना दूसरों के सामने कर सकते हैं और उन्हें भी इसकी सराहना करने के लिए मदद कर सकते हैं। ऐसी प्रस्तुतियों में जिसके ह्रदय को सच्चाई की शक्ति ने शैतान और पाप और स्वार्थ के वश में होने से बचाया है, उनके अंदर से केवल दयालु शब्द और करुणा से भरी दृष्टि ही प्रेम से भरे ह्रदय में से बाहर निकलेगी। इसलिए आइये हम अनुग्रह और सच्चाई के इन उपहारों और आनंद बिखेरने वाले प्रभावों को अपने चारों ओर न केवल साल में एक बार फैलाएँ बल्कि हर दिन और हर घंटे फैलाएँ और न केवल अपने मित्रों के साथ ही बाँटें बल्कि परमेश्वर की तरह अपने शत्रुओं के साथ भी बाँटें क्योंकि “वह भलों और बुरों दोनो पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है”। Z'08-380 R4298:6 (Hymn Appendix W) आमीन

रात का गीत (26 दिसम्बर**)**

भजन संहिता 141:5 धर्मी मुझ को मारे तो यह कृपा मानी जाएगी, और वह मुझे ताड़ना दे, तो यह मेरे सिर पर का तेल ठहरेगा; मेरा सिर उससे इन्कार न करेगा ...।

इस वचन में धर्मी का अर्थ वो सभी लोग हैं जो परमेश्वर के हैं, उन सबको धार्मिकता के लिए फटकार और सुधार उनकी भलाई के लिये मिलती है और जो सुधर जाते हैं उनके लिये यह मददगार होता है। इस तरीके से इन्हें आराम और आशीषें और ताजगी मिलती है, सर्वोत्तम तेल या खुशबुदार तेल की तरह जिसकी खुशबु घंटों तक रहती है। यहाँ इस विचार में हमारे लिये एक महत्वपूर्ण सबक है। सर्वप्रथम, हमें

उनमें से होना होगा जिन्हें परमेश्वर की ओर से सुधार मिलता है और जो लोग जहाँ भी गलत हैं उसे सुधारने की इच्छा प्रसन्न होकर रखते हैं; दूसरा, हमें उनमे से होना है जो अच्छी रिपोर्ट सही ढंग से देना चाहते हैं, और ये रिपोर्ट किसी को हानि पहुँचाने के लिये नहीं बल्कि इस तरह से देते हैं जिससे की दूसरे आत्मिक रूप से बढ़ें और ताज़गी महसूस करें। Z'12-66 R4977:2 (Hymn 172) आमीन

रात का गीत (27 दिसम्बर)

1 कुरिन्थियों 16:14 जो कुछ करते हो प्रेम से करो।

परमेश्वर अनुकम्पा या सहानुभुति और प्रेम का साकार रूप है, जैसा की पवित्रशास्त्र में प्रगट किया गया है --"परमेश्वर प्रेम है"। और वे सब जो परमेश्वर के पुत्र होंगें, जो उनकी समानता में बढ़ेंगे, वे उनके स्नेही या प्रिय बच्चे होंगें। जैसा की प्रेरित यूहन्ना कहते हैं--जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उसमे बना रहता है। जिस अनुपात में हमारी नयी सृष्टि के चरित्र की मजबूती बढ़ती है, प्रेम के गुण भी बढ़ते हैं। इसके अलावा हमारे न्याय करने की क्षमता भी बढ़ती है और हमारा न्याय पहले से ज्यादा सही होता है। जो लोग परमेश्वर की आत्मा में बढ़ते हैं उनके पास फैसला लेने की क्षमता पहले से बेहतर हो जाती है। जैसे जैसे दिन बितते हैं, वे दुनिया के साथ सहानुभूति दिखाने में बेहतर होते जाते हैं, मानवजाति से कैसे सम्बन्ध रखना है, कैसे सामना करना है, ये जान जाते हैं और उन्हें ज्यादा से ज्यादा वह ज्ञान प्राप्त होता है जो ऊपर से (स्वर्ग से) आता है। Z'14-77 R5417:2 (Hymn 23) आमीन

रात का गीत (28 दिसम्बर**)**

1 यूहन्ना 1:9 यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

यह स्पष्ट था, क्योंकि प्रभु ने पूर्वानुमान लगा लिया था की उनके लोग अपने शरीर से विरासत में मिली कमजोरियों के कारण अपनी बार बार मिलने वाली विफलताओं से इतने घबराये हुये हो सकते हैं, और इसीलिए परमेश्वर ने उनके प्रोत्साहन के लिए विशेष उपदेश प्रदान किये हैं - “इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे” (इब्रानियों 4:16) । यह बात अच्छी तरह से याद रखी जाने वाली है। इस पर, एक और वर्ष की समाप्ति के समय और एक नये वर्ष के उद्घाटन के समय, हम आपसे ये आग्रह करते हैं कि, सभी मसीही परमेश्वर के साथ के साथ दैनिक हिसाब रखें और कभी भी यह दया और सहायता का अनुग्रह पाये बिना आराम करने के लिये सोने न जाएँ। लेकिन अगर किसी ने इस मामले में देरी कर दी है और उनके और परमेश्वर के बीच एक बादल आ गया है तो उन्हें निश्चित रूप से इस वर्ष की समाप्ति में इन वादों का लाभ स्वयं उठाना चाहिए ताकि वे एक साफ स्लेट (किताब) के साथ नया साल शुरू कर सकें - अपने लिये उनके पिता के चेहरे की मुस्कान के साथ, और अपने उद्धारकर्ता से मिलाप के साथ और उसके पदचिन्हों पर चलने के लिये ईमानदारी और चौकसी के साथ किये गए ताजा संकल्पों के साथ। Z'11-445 R4932:1 (Hymn 239) आमीन।

रात का गीत (**29** दिसम्बर)

होशे 11:4 मैं उनको मनुष्य जानकर प्रेम की डोरी से खींचता था... ।

प्रेम बाईबल की मुख्य बात है, फिर भी हकीकत ये है कि बाइबल में चेतावनियाँ भी हैं और वादे भी हैं; न्याय का भी वर्णन है और दया भी प्रगट की गयी है। यदि परमेश्वर का चरित्र न्यायरहित होता या उनका प्रेम उनके न्याय से अधिक महत्वपूर्ण होता तो परमेश्वर पर निर्भर सभी लोगों के लिए यह एक भयंकर विपत्ति होती। यदि ऐसा होता तो यह चरित्र की कमजोरी की गवाही होती, मजबूती की नहीं। लेकिन हकीकत ये है कि, परमेश्वर का ज्ञान, न्याय, प्रेम और शक्ति पुरे तालमेल के साथ कार्य करता है जो की उनके लिए हमें श्रद्धालु बनाता है, उनपर हमारे भरोसे को बढ़ाता है, प्रेम को बढ़ाता है, ये सारी सराहनाएं मिलकर प्रचंड होकर हमें उनके कभी न बदलने वाले गुण को महसूस कराती है। Z'15-361 R5809:2 (Hymn 21) आमीन

रात का गीत (**30** दिसम्बर)

भजन संहिता 116:17 मैं तुझ को धन्यवादबलि चढ़ाऊंगा, और यहोवा से प्रार्थना करूंगा।

सांसारिक तौर पे हम चाहे किसी भी परिस्थिति में डाले गए हों, आत्मिक तौर पे हमने उदारता से मिले दिव्य समर्थन पर उत्सव मनाया है; इस आश्वासन के साथ कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करेगी, हमने ये महसूस किया है की संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है (1 तीमुथियुस 6:6), हमारे पास अभी के जीवन के लिए भी वादे हैं (जब तक कि परमेश्वर चाहते हैं कि हम यहाँ रहें), और आने वाले जीवन के लिए भी वादे हैं। इस

कारण हम पूरे ह्रदय से "परमेश्वर को धन्यवाद की बलि चढ़ा" सकते हैं और हमको चढ़ाते रहना है। और क्या हमें न केवल हमारे होठों की स्तुति उन्हें भेंट करनी चाहिए बल्कि हम जिस साल में प्रवेश कर रहे हैं उसमें क्या हमें सालभर अपने सचमुच में समर्पित जीवन की सुगंध को भी भेंट में नहीं चढ़ा देना चाहिए? प्यारे दोस्तों, आज प्रभु के लिए अपनेआप को नए सिरे से समर्पित करो - लेकिन कई साल पहले एक ही बार में हमेशा के लिए किये गए अपने बपतिस्मा के समर्पण को रद्द करने के मतलब से नहीं - बल्कि उसकी पुनः पुष्टि करने की भावना से और उस वाचा पर जोर देने की भावना से। अपने प्रिय प्रभु से कहो कि, तुम अभी भी अपने आपको पूरी तरह से उनका समझते हो, और अभी भी तुम्हारा उद्देश्य यही है कि, इस नए वर्ष में भी तुम अपना सबकुछ बलिदान की वेदी पर तब तक चढाकर रखो जब तक कि वो परमेश्वर की सेवा में पूरी तरह से भस्म न हो जाये। उसके बाद हमें दिन प्रतिदिन इन मन्नतों का मेहनत के साथ सावधानीपूर्वक भुगतान करते हुए आगे बढ़ना है, हमारे पुरे समर्पण की मन्नत को परमप्रधान के सामने चढ़ाते जाना है। Z'06-3 R3695:3 (Hymn 34) आमीन

रात का गीत (31 दिसम्बर**)**

यूहन्ना 14:23 ..."यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे।

क्या आपने हमारे दूल्हे की पुकार, दस्तक, घोषणा को सुना है? क्या आप जाग रहे हैं? क्या आप यह ध्यान रख रहे हैं कि, आपने मसीह की धार्मिकता के वस्त्र को पहन रखा है? प्रभु यीशु के मार्गदर्शन पर ध्यान रखते हुए आप इस धार्मिकता के वस्त्र को बिना किसी "कलंक ना झुर्री ना कोई और ऐसी वस्तु" (इफिसियों 5:27) से

बचाकर रखें और एक दूसरे की मदद करें, और "ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों - त्यों और भी अधिक यह किया करो" (इब्रानियों 10:25) क्योंकि यह लिखा है कि "मेम्ने की दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है" (प्रकाशितवाक्य 19:7) Z'80-April, p.7 R88:6 (Hymn 165) आमीन